7. अकबर

- सन 1556 ई० में अकबर बादशाह घोषित किया गया, तब वह 13 वर्ष का था| अकबर बहुत छोटा था इसलिए राज्य के सारे मामलों की देखभाल, प्रशासन और युद्ध के कार्य बैरम खां ही करता था | सबसे पहला संघर्ष हेमूँ से हुआ | हेमूँ राजाओं में से एक का सेनापति का और उसने शेरशाह के राज्यकाल में अपनी शक्ति को सुद्रढ़कर लिया था |
- बैरम खां और हेमूँ के बीच पानीपत का दूसरा युद्ध हुआ | हेमूँ की पराजय हुई और दिल्ली और आगरा पर जो मुगलों के हाथ से निकल गए थे, अकबर का फिर से अधिकार हो गया |
- ग्वालियर अजमेर और जौनपुर जैसे अन्य प्रमुख नगरों और किलों को जीतने के लिए अग्रसर हुआ और उसने मालवा को भी अपने राज्य में मिला जिससे अकबर का राज राजपूत राज्यों का पडोसी बन गया |
- रणथंभौर और चित्तौड़ जैसे राजस्थान के दो शक्तिशाली दुर्गों पर मुगलों का अधिकार हो गया |
- अकबर ने संपूर्ण भारत को एक राष्ट्र समझा और उसने संपूर्ण भारत पर शासन करने की इच्छा की| इसलिए उसने सब दिशाओं में अपनी सेनाएं भेजी और उसने गुजरात को विजय कर लिया | विजय इस कारण और महत्वपूर्ण थी कि गुजरात के समुद्र पार व्यापार से होने वाला कर मुगल साम्राज्य को मिलने लगा | बाद में बंगाल को भी विजय करके साम्राज्य में मिला लिया गया | इस क्षेत्र का भी महत्व था क्योंकि यहाँ उपजाऊ भूमि से बहुत सा लगान और विदेशी व्यापार का बहुत सा कर मिलता था|
- सन 1595 ई० तक अकबर ने कश्मीर, सिंध, उड़ीसा, मध्य भारत और अफगानिस्तान के कंधार को जीत लिया| उत्तर भारत का संपूर्ण क्षेत्र अब मुगलों के अधिकार में आ गया| भारत के केवल असम और दक्षिणी प्रायद्वीप के राज्य स्वतंत्र रह गए|
- अकबर दक्षिण को विजय करने के लिए अधिक उत्सुक नहीं था| किंतु उसने यह अनुभव कर लिया कि दक्षिण पर अधिकार कर के ही वह संपूर्ण प्रायद्वीप पर अधिकार कर सकता है| इसलिए अहमदनगर राज्य के विरुद्ध अभियान आरंभ हुआ| यह घेरा 8 साल तक चला क्योंकि दक्षिण के राज्यों ने मुगलों का विरोध करने में अपनी सारी शक्ति लगा दी थी |

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

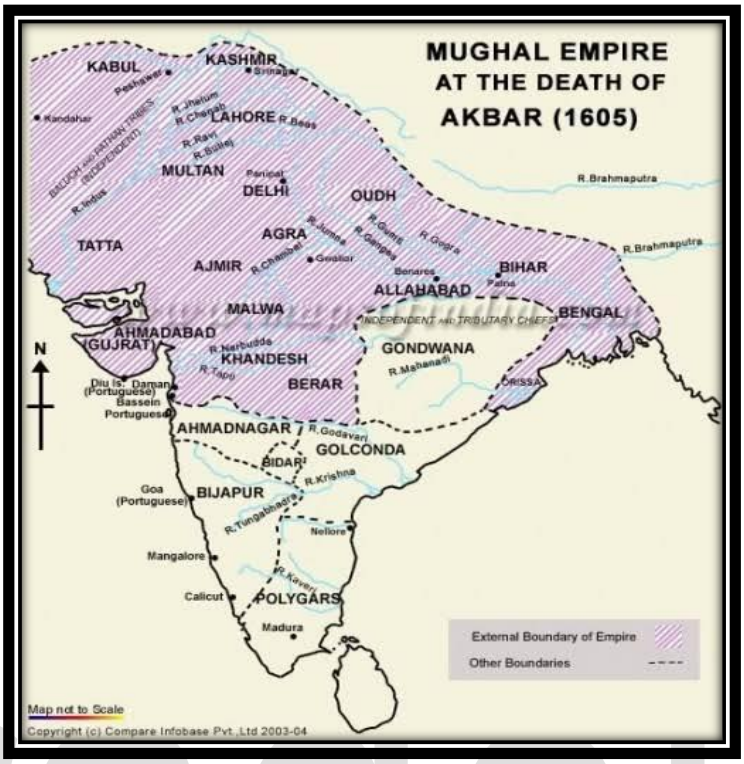

प्रशासन

- मुगलों की शासन प्रणाली भारत में विद्यमान तथा मध्य एशिया और फारस से मुगलों के द्वारा ग्रहण की गई शासन प्रणालियों का सम्मिश्रण था|
- मनसबदारी प्रथा मुगलों की शासन प्रणाली की सबसे प्रमुख विशेषता थी| हर एक सरदार, अधिकारी और नागरिक कर्मचारी को एक पद या मनसब दिया जाता था, उसको मनसबदार कहा जाता था|
- सम्राट अनेक अफसरों के सहारे शासन करता था इन अफसरों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण वजीर और बख्शी होते थे| वजीर लगान वसूल करने के प्रबंध की ओर और बख्शी सेना के प्रबंध की देखभाल करता था|
- अकबर के शासनकाल में मुगल साम्राज्य 15 सूबों में विभाजित था| एक अन्य अधिकारी भी था जिसके नाम से आज भी उत्तर भारत के कस्बों और गांव में लोग परिचित हैं| यह कोतवाल होता था जिसके अधिकार में नगर का प्रशासन रहता था| अपराधियों को पकड़ने का उत्तरदायित्व कोतवाल पर था व्यापारियों के द्वारा नापतोल में प्रयोग किए जाने वाले बाटो की भी देखभाल करता था|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

राज्यों की आमदनी

- मुगल राज्य को दो साधनों से धन प्राप्त होता था| एक साधन था भूमि का लगान और दूसरा व्यापार पर कर|
- यद्यपि अकबर चाहता था कि नकद वेतन दिया जाए पर वास्तव में बहुत से अधिकारियों को भूमि के लगान का अनुदान मिला था जिसको जागीर कहते हैं|
- राज्य उपज का एक तिहाई भाग लगान के रूप में वसूल करता था| व्यापार से इतना कर नहीं प्राप्त होता था जितना भूमि से लगान| किंतु गुजरात और बंगाल जैसे क्षेत्रों में जहां व्यापार की बड़ी उन्नति हो रही थी इस व्यापार कर से सूबे धनवान बन गए|
- भारत के समुद्र तट पर बहुत बड़े-बड़े बंदरगाह थे | भारत के व्यापारी कपड़े, नील, शोरा और मसाले दूसरे देशों को भेजते थे|

साहित्य और ललित कलाएँ

- अकबर ने कभी पढ़ना-लिखना नहीं सीखा था पर वह श्रेष्ठ पुस्तकों से परिचित था| उसने अनेक पुस्तकें पढ़वाकर सुनी और सभी प्रकार के दार्शनिकों, विद्वानों और लेखकों के साथ विचार विमर्श किया| उसको काव्य में भी विशेष रूचि थी|
- उसके दो घनिष्ठ मित्र जिनसे वह बहुधा तर्क-वितर्क करता रहता था| दो भाई अबुलफजल और फैजी थे| अबुलफजल ने अकबरनामा (अकबर का जीवन चरित्र) नामक पुस्तक की रचना की| 'आइने' अकबरी इसी पुस्तक का एक भाग है| इस भाग में साम्राज्य के नियम, कानून और लगान व्यवस्था का विवेचन किया गया है|
- मुगल साम्राज्य की राजभाषा फारसी थी| इस काल में संपूर्ण 'महाभारत' और 'रामायण' का फारसी में अनुवाद किया गया और अबुलफजल ने इन अनुवादों की भूमिका लिखी|
- इसी काल में बहुत से कवियों ने हिंदी काव्य रचना आरंभ की वल्लभाचार्य, केशवदास और रहीमदास उनमें प्रमुख थे| तुलसी की रचना और अधिक महत्वपूर्ण थी उन्होंने रामायण की कथा लिखी और उसका नाम 'रामचरितमानस' रखा|
- अकबर के दरबार में प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन था| उसने अनेक रागों की गायन शैली में नवीनता का समावेश करके भारतीय संगीत को समृद्ध किया| राग दरबारी इन रागों में बहुत लोकप्रिय था उसके संबंध में कहा जाता है कि तानसेन ने उसकी रचना विशेष रूप से अकबर के लिए की थी|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- अकबर के दरबार में बहुत से चित्रकार भी थे जो उसके पुस्तकालय और पुस्तकों को सजाने के लिए छोटे आकार के चित्र बनाते थे| यह चित्रकार भारत और फारस की मिश्रित शैली में चित्र रचना करते थे| वे जिन रंगों का प्रयोग करते थे वे विशेष रूप से भारतीय थे और उनके चित्रों की कोमलता और बारीकी विशेष रूप से फारसी शैली की थी|
- अकबर के दरबार के बहुत से चित्रों का संबंध अकबर के जीवन और उसके दरबार की घटनाओं से था|
- अब पुस्तकें ताड़ के पत्तों या वृक्षों की छालों पर नहीं लिखी जाती थी बल्कि कागज पर लिखी जाती थी| कागज का आविष्कार चीन में हुआ और पश्चिमी एशिया में उसका निर्यात होता था|14वीं शताब्दी तक भारतीय व्यापारी भी कागज का आयात करने लगे थे और बाद में वह भारत में भी बनाया जाने लगा था|
- इस काल में भी भारत में पुस्तकें हाथ से ही लिखी जाती थी यद्यपि चीन और यूरोप में छापेखाने का आविष्कार किया जा चुका था|
- हिंदी और संस्कृत की पुस्तकों को लिखने में सामान्यतया देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता था|

वास्तुकला

- दिल्ली और आगरा में अकबर का दरबार लगता था पर अकबर ने अपनी राजधानी बनाने के लिए एक नए नगर के निर्माण का निश्चय किया | यह आगरा के निकट फतेहपुर सीकरी था| इसी स्थान पर सूफी महात्मा शेख सलीम चिश्ती रहता था और अकबर उसका बड़ा आदर करता था | इसी कारण उसने इस स्थान पर अपनी राजधानी बनाने का निश्चय किया|
- फतेहपुर सीकरी की वास्तुकला में फारस, मध्य एशिया तथा भारत की विभिन्न शैलियों का अद्भुत सम्मिश्रण देखने को मिलता है |
- मुगल शैली के बने सभी मकबरों में एक फाटक और एक बाग होता है|
- इस काल की मुगल वास्तुकला ने आरंभिक भारतीय शैली की अनेक विशेषताएं ग्रहण की जैसे प्रवेश द्वारों पर वर्गाकार ब्रैकेट अथवा गुफाओं की डिजाइन इत्यादि|
- साथ ही साथ इस मुगल कला का प्रभाव हिंदू राजाओं के राजमहलों और मंदिरों की निर्माण कला पर भी पड़ा | वृंदावन का गोविंद देव मंदिर, इस कारण कि वह लाल

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

पत्थर का बना है और उसमें यह मिश्रित शैली स्पष्ट है, आसानी से पहचाना जा सकता है|

अकबर की धार्मिक नीति

- फतेहपुर सीकरी की एक इमारत का नाम इबादतखाना था| इसी स्थान पर अकबर विभिन्न धर्मों के सिद्धांतों पर विचार-विमर्श करवाता था| अकबर को धर्म की समस्याओं में विशेष रुचि थी | वह अनुभव करता था कि प्रत्येक धर्म ईश्वर की ओर संकेत करता है|
- इबादतखाने में सबसे पहले इस्लाम धर्म के आचार्य आए | बाद में हिंदू, फारसी, जैन, ईसाइयों को भी सम्राट के साथ विचार-विमर्श के लिए आमंत्रित किया गया|
- उसने अपना कोई धर्म नहीं चलाया| उसने केवल एक नए धार्मिक मार्ग का सुझाव दिया| वह सब धर्मों के सामान्य सत्यों पर आधारित था और इसमें सब धर्मों के कुछ सिद्धांतों का समावेश कर दिया गया था बाद में यही धार्मिक मार्ग दीन-ए-इलाही कहलाया जिसका तात्पर्य था एक ईश्वर का धर्म|
- उसने शांति और सहिष्णुता की भावना को प्रोत्साहन दिया उसने जीव हिंसा की भावना का विरोध किया और सुझाव दिया कि कम से कम 1 वर्ष के एक निश्चित समय में लोगों को मांस खाना बंद रखना चाहिए| उसने कठोर दंड देने की प्रथा को उचित नहीं माना और अपराधियों के अंग-भंग करने के दंड को भी वह उचित नहीं समझता था|
- पति की मृत्यु पर स्त्रियों के सती होने की प्रथा का घोर विरोध करता था| उसने अपनी प्रजा में सूर्य, अग्नि और प्रकाश को आदर-सम्मान देने की भावना का समावेश किया|
- सन 1605 ई० में अकबर की मृत्यु होने पर उसे उसी मकबरे में दफनाया गया जिसको उसने आगरे के निकट सिकंदरा में स्वयं अपने लिए बनवाना आरंभ किया था|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now